चतुर्थ अध्याय

** सुमनजी का प्रगतिवादी काव्य - शिल्प विधान **

चतुर्थ अध्याय

सुमनजीका प्रगतिवादी काव्य : शिल्पविधान

'सुमन जी भारतीय माटी की वह गंध हैं, जिसमें जीवन रस आनंद सर्वत्र महमहाता रहता है। जिसतरह धरती की अभिव्यक्ति वनस्पतियों में होती हैं, उसीतरह वनस्पतियों के रस से जीवित मानव प्राणी की अभिव्यक्ति उसकी कलात्मकता और वैज्ञानिकतामें होती हैं। सुमन जी भारतीय संस्कृति के अभिव्यक्ता है। प्रकृति, रुप, रस आदि के चितेरे भी हैं, जीवन रस के मादकता के गायक हैं।' 1

कवि सुमनजी की 1938-39 तक की रचनाओंमें छायावाद और हालावाद का प्रभाव दिखाई देता हैं और सुमित्रानंदन पंत की तरह उन्होंने स्वीकार किया कि,

'मेरे उर में जो निहित व्यथा
कविता तो उसकी एक कथा।' 2

बदली हुई परिस्थितियोंको देखकर उन्होंने नये पथ का चुनाव किया प्रगतिवाद का, इसमें क्रांति का आवाहन था, उसके साथ राष्ट्रीय भाव भी प्रचूर मात्रामें थे। गरीबी-दारिद्रय के साथ गुलामी को वे अभिशाप समझते थे। उसी तरह पूँजीवाद सामंतवादी के विरोधक थे।

कवि सुमनजी ने अनेक प्रकारकी कविताएँ लिखी - 'सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना आदि इसलिए भाषिक सर्जनात्मक दृष्टिसे देखा जाय तो सुमन एक सफल कलाकार हैं। सुमनजी के काव्यमें सहज भाषा, मुक्त छंद, सामासिक शैली अनुभूति के स्तरपर अंर्तमुखता और आत्मावलोकन की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।' 3

अबतक हमने सुमनजीके कृतित्व, प्रगतिवादी काव्य का प्रवृत्तिसंगत विवेचन किया हैं, इस अध्यायमें हम उनकी भाषा, अलंकार छंद संबंधी विवेचन करेंगे।

काव्यांतर्गत सौंदर्य को देखने के लिए हमें उसमें निहित भावों को भी देखना पड़ता हैं। साथ ही उसकी कल्पना तथा अनुभूति की व्याख्यात्मक आलोचना करनी पड़ती हैं।

काव्य की भाषा उसका शरीर है तथा उसकी कल्पना, अनुभूति याने भावपक्ष उसकी आत्मा। कलापक्ष अर्थात काव्य के बहिरंगमें हमें काव्य की भाषा उसकी अभिव्यक्ति, अलंकार, छंद आदि की

---

1. रवींद्रनाथ मिश्र - डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन का समीक्षात्मक अध्ययन - पृष्ठ 7
2. डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 22
3. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन : मनुष्य और स्त्रष्टा - पृष्ठ 127

विवेचना करनी पडती हैं और भावपक्षमें रसयोजना, कल्पना, अनुभूति का विवेचन करना हैं।

1. छंद विधान :-

छंद विधान कवि के काव्य व्यवहार का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। भारतीय काव्य परंपरामें छंद को सदैव अनिवार्य रुपमें ग्रहण किया। 'छायावादी युगमें तो छंद विधान में क्रांति आयी। छंद और कविता एक दूसरे के पर्यायवाची है। फिर भी निरालाजीने हिंदी कविता की छंद बंधन से मुक्ति की घोषणा की। पाश्चात्य विद्वान अरस्तु का मत थाकि, 'छंद कविता का अनिवार्य माध्यम नहीं हैं।' तो कोई विद्वान कहते हैंकि, छंदोबध्द रचना का नाम ही कविता हैं।' 1

छंद के कारण काव्य की शक्ति बढ़ जाती है। श्री सुमित्रानंदन पंत के अनुसार - 'कविता हमारे जीवन का संगीत है, छंद उसकी धड़कन या जीवित चेतना, कविता का स्वभाव ही है, छंदमें लयमान होना।' 2

पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का मत हैंकि, पद्य की रचना लंबाई की विशेष नाम के अनुसार होती है। इसी बंधन का नाम छंद हैं।

सुमनजी के छंद विधान में पर्याप्त विविधता हैं। उनके छंद विधान के तीन विभाग हैं।

क) मात्रिक छंद - सुमनजी ने काव्यमें सम और विषम मात्रिक छंदों का प्रयोग किया हैं।

समान मात्राओंसे निर्मित पद अंतर्गत आनेवाले छंदोंको सम मात्रिक छंदमें समाविष्ट किया जाता हैं। कविने चौदह मात्राओंके छंदका प्रयोग किया है। जैसे -

'अंबर व्रज वन वीथी की - 14 मात्राएँ
मधुघट झलकति ग्वालिन'। 3 14 मात्राएँ

सुमनजी ने अनेक स्थानोंपर बारह और सोलह मात्राओंका प्रयोग किया है। बारह मात्राओंका एक उदाहरण देखिए -

'यह मेरे पथ के पहचाने - 12 मात्राएँ
यह मेरे जीवन के गाने।' 4 12 मात्राएँ

सोलह मात्राओंका उदाहरण देखिए -

'तव मधु की मदिर सरसतामें - 16 मात्राएँ
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।' 5 16 मात्राएँ

---

1. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी - रसदोष अलंकार निरुपण - पृष्ठ 147
2. डॉ. अरविंद पांडे - हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प से उधृत - पृष्ठ 112
3. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 85
4. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 25
5. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 46

कविने सत्ताईस मात्राओंका 'सरसी' छंद का अत्यंत सुंदर प्रयाग किया है। जैसे

'जिस गोदी में जीवन पाया पाया लाड़ दुलार - 27 मात्राएँ
आज उसीमें बिना कफन के सोए शिशु सुकुमार।' । 27 मात्राएँ

कविने वत्तीस मात्राओंका समान 'सवाई' छंद का प्रयोग किया है। उदा.

1. 'इसी अग्नि से प्रलय मचा था, इसी अग्निसे सृष्टि हुई थी।' 2

2. 'नयनों ने नयनोंसे मिलकर अपनापन पहचान लिया था।' 3

सुमनजी ने मिश्र मात्रिक छंद का भी प्रयोग किया है -

दब न सकेगी - 8 मात्राएँ
थम न सकेगी - 8 मात्राएँ
अंडिग माँग हैं, अडिग माँग हैं - 16 मात्राएँ

ख) लयात्मक मुक्तछंद :-

प्रयोगवाद में छंदयोजनामें परिवर्तन हुआ। प्रगतिवादी कवियोंने प्राचीन छंदोंको अनुपयुक्त मानकर मुक्त छंदको अपना लिया। कुछ कवियोंने गीतात्मक शैली का प्रयोग किया।

डॉ. सुमन ने लयात्मक मुक्तछंद, लयहीन मुक्तछंद, और गेय छंद का प्रयोग किया हैं। सुमनजी को लयात्मक मुक्तछंदमें अद्भूत सफलता मिली हैं।

उदा.

'न जाने बात क्या है
साँझ होते ही
तुम्हारी याद आती है
लजीली लालिमा के पार
सपनों की तरी सी तैर जाती है।' 4

ग) लयहीन मुक्तछंद -

इस छंदमें एक ही प्रकारके लय की त्रुटि रहती है और छंद एक गति से न बढ़कर रुक रुक कर आगे बढ़ता है उसे लयहीन मुक्तछंद कहते हैं।

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 77
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढ़ता ही गया - पृष्ठ 26
3. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 79
4. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 83

उदा. 'अब आओ सामने
खुला बाजार हैं
बैठे ठाले अच्छा काम मिल गया।' 1

घ) गेय छंद -

प्रगतिवादी कवियोंमें गीतकार के रुपमें सुमनजी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कवि संमेलनोंमें वे झूम-झूमकर अपनीकविता प्रस्तुत करते हैं। इस शैलीमें अंतस्थ भावोंको गीत के माध्यमसे कवि वाणी देते हैं।

उदा. 1) 'तुम पुछ रहे हो मेरा परिचय
तुम पुछ रहे हो मेरा निश्चय
मैं क्या जानू इस जगती में
अभिशाप रुप हूँ या वर हूँ
मै पथ का कंकड़ पत्थर हूँ।' 2

2) 'आशा अभिलाषा का धन है
सब कहते है मुझमें यौवन है
तुम्हीं बता दो यौवन मद में
कौन हुआ मदहोश नहीं है
मेरा इसमें दोष नहीं हैं।' 3

इसप्रकार सुमनजीने अनेक स्थानोंपर गेय छंद का प्रयाग किया हैं।

निष्कर्षतः सुमन जी ने अपनी कवितामें छंद की महत्ता स्वीकार कर उसके भरपूर प्रयोग किये हैं। छंदों के सभी प्रकार उनके काव्यमें दिखाई देते हैं। मात्रिक छंद, लयात्मक मुक्त छंद, लयहीन मुक्त छंद का प्रयोग सुमनजीने प्रचूर मात्रामें किया हैं।

2. अलंकार :-

अलंकार शब्द 'अलं' और 'कार' दो शब्दों से मिलकर बना हैं। जिसका अर्थ हैं, शोभा करनेवाला, काव्यको आभूषित करनेवाला उपकरण अलंकार हैं।' 4 अलंकार काव्यके रुपको सजाते हैं। जिसप्रकार किसी युवती को अलंकार शोभा देते हैं। इसी प्रकार अलंकार कविता को प्रेषणीय बना देते हैं, और अलंकार का सर्व प्रमुख गुण है रमणीयता - सुंदरता। इसके अभावमें अलंकार अलंकार नहीं रह

---

1. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 74
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 18
3. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 62
4. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी - रस दोष छंद अलंकार निरुपण - पृष्ठ 88

जाता। अलंकार और काव्य का घनिष्ठ संबंध हैं। चाहे गद्य हो या पद्य हो, दोनों ही में अलंकारोंका प्रचूर मात्रामें प्रयोग होता हैं। अलंकारों का प्रयोग नितांत स्वाभाविक हैं। किसी तथ्य, अनुभूति, घटना या चरित्र की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए अलंकारोंका उपयोग होता है।

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन के कविताओंमें सभी मुख्य अर्थालंकार पाये जाते हैं।

क) **शब्दालंकार** - जिस अलंकारमें शब्दोंके प्रयोग के कारण कोई चमत्कार उपस्थित होता है, उन शब्दोंके स्थानपर समानार्थी दूसरा शब्द रखनेसे वह चमत्कार समाप्त हो जाता हैं वहाँ शब्दालंकार माना जाता हैं। जहाँ एक व्यंजनोंकी आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार हैं। शब्दालंकारमें अनुप्रास, यमक और पुनरुक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1) **अनुप्रास** - अनुप्रास सुमनजी का प्रिय अलंकार हैं

उदा.

'लहरों पै लहर टूट
उठती घूधराकर
पानी भी परशुधार के
प्रहार पर प्रहार
अररर छाः अररर छाः
माटी के बंधन सब काट रहीं धारधार
जीर्ण शीर्ण जर्जर कंकाल
कन्काल जड़ उखाड़ तोड़ हाड़।' 1

उसी तरह 'विश्वास बढ़ता ही गया' काव्यसंग्रह की कविता'नई आग है, नई आग है' में भी इसप्रकार का वर्णन मिलता है -

'नवजीवन की नई ज्योति का
नया सबेरा नया तराना
नहीं पुराना, नहीं पुराना
नया राग हैं, नया राग हैं।' 2

उपर्युक्त दो उदाहरणोंमें र, न, ड वर्णोंका प्रयोग हुआ हैं। इसीप्रकार कविने छेकानुप्रासका भी प्रयोग किया हैं-

मैं एक नौसिखिया निरा
गिर गिर उठा उठ उठ गिरा

---

1. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 58
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 25

बन कन मिटा, मिट मिट बना
पर निज विकास न खो सका
मैं तो निराश न हो सका।' 1

पर आँख नही भरी काव्यसंग्रहमें कवि कहते है -

'सहसा सिहरन सी दौड़ गयी
कण - कण अणु अणु के स्पंदनमें।' 2

यहाँपर स, क, अ की आवृत्ति कई बार हुई जिसके कारण शब्दोंमें सुदरता आ गयी।

यमक :- जहाँ शब्द और वाक्य पुनःपुनः आते हैं, लेकिन उनके अर्थ अलग होते है, वहाँ यमक अलंकार होता हैं।

उदा. 'क्या किसी साँस की रगड़ ज्वालमें बदली?
क्या कभी बाष्प सी साँस बन गई बदली?

उपर्युक्त पंक्तियोंमें बदली शब्द दो बार आया हैं।
चेतना के मूल कविता में कवि कहते हैंकि,

'प्रलय मेघ घटाओप
फटते मूसलाधार
अंधकार ज्वार बना
ज्वार बना अंधकार।' 3

इन पंक्तियोंमें अंधकार और ज्वार शब्दका दो बार प्रयोग हुआ है, लेकिन उनके अर्थ भिन्न हैं।

अर्थालंकार - अर्थमें चमत्कार उत्पन्न करनेवाले अलंकार को अर्थालंकार कहते हैं। इसमें उपमा, उत्प्रेक्षा रुपक तथा मानवीकरण अलंकार प्रमुख हैं।

1. उपमा - जहाँ उपमेय और उपमान में किसी प्रकार या प्रभावमें समानता हो वहाँ उपमा अलंकार होता हैं। उपमा अलंकारमें सादृश्य की प्रधानता के कारण उस समझना आसान हो जाता हैं। उपमा के चार अंग होते हैं, उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक। इन चारोंके सहयोगसे वाक्य के अर्थमें सुंदरता आती हैं।

उदा. वह आधारहीन अध पर लहराने लगा
प्रलय पयोधि पै विमुक्त विजय के तुसा।' 4

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 35
2. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 97
3. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 61
4. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 61

2. **रुपक** - जहाँपर उपमेंपर उपमान का आरोपकर दोनों एक कर दिया जाता है, वहाँ रुपक अलंकार होता हैं। उपमामें उपमेय और उपमानमें थोड़ा अंतर रहता हैं जैसे -

'दूर कहीं अंधड़-सा उठ रहा है दुर्निवार
दिग्वधुएँ ध्वान्त - भ्रांत।' 1

इसमें दिग्वधुएँ रुपक अलंकार है, उसका अर्थ है दिशाएँ रुपी वधुएँ।

3. **मानवीकरण** - जहाँ जड़ के उपर मानव चेतना का अथवा मानवी क्रिया का आरोप किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार माना जाता हैं। जैसे -

'दीप छिपाएँ चली समेटे निशा दिशा का अंचल।' 2

यहाँपर निशा का मानवीकरण कवि ने किया है, तारों के दीपोंको रजनीने समेटकर अपने अंचलमें छिपाएँ हैं। इसप्रकार कवि ने युवतियों की रुपसज्जा एवं क्रियाओंका अत्यंत सुंदर वर्णन किया हैं।

इसीतरह सुमनजीने अपनी कविताओंमें अलंकारों का उपर्युक्त प्रयोग किया है, परिणामतः उनकी कवितामें सुंदरता, सहजता व्यक्त हुई हैं।

शैली विधान -

सुमनजी की काव्यमें जो शैलियाँ प्रयुक्त हैं। वे इसप्रकार -

1. **उद्बोधनात्मक शैली** - उद्बोधनात्मक कविताएँ सुमनजी के काव्यका एक महत्वपूर्ण अंग हैं। जिसमें क्रांति के ओजस्वी स्वरोंका आवाहन हुआ हैं। तथा नवसंस्कृतिका आभास व्यक्त होता हैं। सुमनजी की कवितामें उद्बोधन शैली के कारण भाषा की प्रवाहमयता सर्वत्र दिखाई देती हैं। सुमनजीकी काव्यमें दिनकर तथा निराला की तरह ओज गुण दिखाई देता हैं। जिनकी भूमिका भावपर आधारित हैं और उसमें एक अदम्य उत्साह दिखाई देता हैं।

कवि सुमन के काव्यमें उद्बोधनात्मक स्वर 'हिल्लोल' के बाद के रचनाओंमें दिखाई देता हैं। उसका विकसित रुप 'जीवन के गान' और प्रलयसृजनमें दिखाई देता है।

'जीवन के गान' में अधिकांश कविताओंमें वीरतापूर्ण ओजस्वी स्वर व्यक्त हुए हैं। विद्रोह करो, विद्रोह करो शीर्षक कवितामें कवि हर मनुष्य को कर्मण्य बनने की प्रेरणा देता हैं। इस शोषनीय जीवन

---

1. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 58
2. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 23

से मुक्ति पाने के लिए वीरोंको शोभा देनेवाले कार्य करना चाहिए। यही मनुष्य जीवन का ध्येय है, अगर ऐसा कोई भी कार्य नहीं कर सकता तो उसका जन्म व्यर्थ है, इसलिए कवि कहता हैंकि -

'आओ वीरो चित कर्म करो
मानव हो कुछ तो शर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे
इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो।' 1

उसीतरह 'पथ भूल न जाना पथिक कहीं' में कवि सुमन कहते हैंकि -

'कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे
जब महाकाल की माला में
माँ माँग रही होगी आहुती
जब स्वतंत्रता की ज्वालामें
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।' 2

इसके अलावा यह तो गति न मेरी बंद हो, लो आज बज उठी रणभेरी, आज आधी रात आदि इस प्रकार की अन्य कविताएँ हैं।

'प्रलयसृजन की 'परिक्षा दो' कविता इसप्रकार की हैं। जिसमें कवि युगमानव को उसके कर्तव्य पथ की ओर अग्रसर होने का संकेत दिया हैं।

'जर्जरित अमों का अंधकार
प्रस्फुटित उषा की अरुण किरण
युगमानव, आज हथेली पर
सर धर कर डालो मरण वरण
इस जीर्ण पुरातन जगती का
कर डालो नुतन संस्करण
बलिदानी। आज परिक्षा दो।' 3

कवि सुमन की 'विश्वास बढ़ता ही गया' की कविताएँ कवि की दृढ आस्था को व्यक्त करती हैं। कहाँ समाप्त साधना नई आग है, आज देश की मिट्टी बोल उठी है, शांति की बाँहे बढाए है, हिमालय आदि उद्बोधनात्मक कविताएँ हैं।

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 9।
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 48
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 55-56

उदा. 'नवजीवन के लिए व्यग्र
तन मन यौवन जलता है
हृदय-हृदयमें, श्वास-श्वासमें
बल है, व्याकुलता है
बलिवेदी पर विव्हल जनता
जीवन तौल उठी
आज देश की मिट्टी बोल उठी हैं।' 1

उसीतरह नई आग है, नई आग है शीर्षक कविता में नवीन क्रांति का स्वागत किया हैं। कविके अनुसार संपूर्ण एशियामें क्रांति की चिनगारी फैल गई हैं।

2. व्यंग्यात्कम शैली -

किसी भी साहित्यमें 'व्यंग्य' का अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं। कवि व्यंग्य के आड़में समाज की कुरीतियाँ, धर्म, समाज, परिवार, अंधविश्वास का पर्दाफाश करता हैं। आधुनिक युगमें व्यंग्यात्मक शैली का महत्व बढ़ गया हैं।

प्रगतिवादी युगमें सुमन जी इस महत्वपूर्ण शैली को अपनाकर देश व समाज दशा का वर्णन किया। कवि सुमन की संस्कृति, धर्म आदि की लिखी गई कविताओंमें व्यंग्यात्मक शैली का अधिक प्रयोग हुआ हैं।

कलकत्ते का अकाल' नाम कवितामें सुमनजीने भाग्यवाद का विरोध व्यंग्यमय शैलीमें किया हैं।

'डाल दया की दृष्टि वताकर
जीवन का अभिशाप
धर्म-धुरीणों के शब्दोंमें
पूर्व जन्म के पाप।' 2

कवि 'कंकड़ पत्थर' कवितामें लिखता हैंकि, कुछ लोग आँखे होते हुए भी अंधे लोग की तरह पत्थर से टकरा जाता है, तो क्रोधित होकर फिर उसी पत्थरपर लात मारते हैं -

'आँखों के रहते भी अंधे
आकर मुझसे टकरा जाते
गर्वित निज बल की क्षमता में
दो लातें और जमा जाते।' 3

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 5।
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 69
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 18

इसप्रकार सुमनजी पूँजीपति के उपर मार्मिक व्यंग्य किया है। 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में प्रकाशित सन 1979 की किस सॉपने सूंघा कविताओं देश की दुर्दशा का अपनी व्यंग्यपूर्ण शैलीमें वर्णन किया हैं -

'देखे मेरे इस तरह क्यों खिन्न, त्रस्त, उदास
बन गए हो स्वयं अपनी विकृति के उपहास
लीलता हर किरन कन को स्वार्थ का खग्रास
शील, संयम, आचरण चरने गए हैं घास।' 1

प्रस्तुत पंक्तियोंमें देश के राजनीतिकर्ताओं के उपर व्यंग्य किया गया हैं। उस समय देश की हालात देखकर कवि नैतिकताके मानवीय मूल्योंका उपहास करता हैं।

इसतरह अपनी अनेक कविताओं के माध्यमसे समाज, देश, पूँजीपति, साम्राज्यवादियों पर कठोर व्यंग्य किये हैं।

3. **वर्णनात्मक शैली** -

वर्णनात्मक शैली काव्य का पुराना प्रकार हैं। यह शैली व्याख्यात्मक तथा विवरणात्मक वर्णन के लिए उपयुक्त होती हैं। किसी भी विषयका विवेचनात्मक अध्ययन, वर्णन इस शैली के अंतर्गत आ जाता हैं।

वर्णनात्मक शैलीमें किसी स्थान, वस्तु अथवा प्रकृतिका नयन मनोहर दृश्य आदि विषयोंका वर्णन रहता हैं।

सुमनजी की कविताओं वर्णनात्मक शैली के सुंदर उदाहरण प्रचूर मात्रामें हैं।

एक उदाहरण

'धक-धकाती धरणि थर, थर उगलता अंगार अंबर
भुन रहे तलुवे, तपस्वी सा, खड़ा वह आज तन कर
शून्य सा मन, चूर है तन, पर न जाता वार खाली
चल रही उसकी कुदाली।' 2

इसके अलावा 'सोवियत रुसके प्रति'ए स्तालिनग्रेद, 'कलकत्ते का अकाल' आदि कविताएँ इस शैलीमें लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त 'मिट्टी की बारात' संग्रह की मिट्टी की बारात' कविता में कवि कहते हैंकि -

---

1. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 28
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 2।

'माता की बेटी जब माता बन जाती है
तो निहाल हो जाता संपूर्ण नारीत्व
खर्च कर देती वह अपना अमूल सत्य
फिर धारण करने को नया बीज नयी सृष्टि
मिट्टी सदा कुंवाँरी है, उसमें हैं अनंत रस
देर नहीं करते फसल, आगत के स्वागतमें
तत्पर होती तुरंत।' 1

4. संवादात्मक शैली -

सुमनजी के द्वारा प्रयुक्त शैलियोंमें से संवादात्मक शैली भी एक हैं। इस शैली के अनुसार दो से अधिक या दो व्यक्तियों के बीच चनलेवाले संवादों के माध्यमसे विषय प्रस्तुत होता हैं। इस शैली का प्रयोग सुमनजीने 'मुनिया का यौवन' कवितामें किया हैं। जैसे -

'अच्छे तो मलिकै?' कहा उसने मैं न फिर फिरकर देखा
वह कौन? मुनिया थी, मेरी स्मृति की धुँधली रेखा,
हाँ अच्छा हूँ, तुम नीका तना रहु
मैं भूला-सा बोला
वह हँसकर ही रह गई
हवा से पेड़ नीम का भी डोला।' 2

कवि ने बड़ी सीधा सादी भाषाका प्रयोग किया हैं। भाषा पात्रानुकुल हैं।

5. प्रतीकात्मक शैली -

प्रतीक शब्द का अर्थ है, चिन्ह, निशान किसी बातोंका सूचक या प्रतिनिधी।

कभी कभी मानव अपनी भावना सीधे ढंगसे व्यक्त नहीं कर सकता तब वह प्रतीकों की सहायता लेकर उसे व्यक्त करनेका प्रयास करता हैं। भारतीय काव्यशास्त्रमें प्रतीक सिर्फ अलंकार विधान का एक रुप माना है, लेकिन पाश्चात्य इसे अधिक महत्व दिया हैं, वहाँ से इसका नाम प्रतीकवाद पड़ गया।

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार, 'प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तुके लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है, कि किसी अन्यस्थान की समान रुप वस्तु द्वारा किसी अन्य पध्दति के विषय का प्रतिनिधित्व करनेवाली वस्तु प्रतीक हैं।' 3

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 43
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 26-27
3. संपादक डॉ. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश - पृष्ठ 545

सुमनजी के काव्यमें प्रतीक विधानमें विविधता हैं। कवि ने मानव जीवन तथा प्रकृति के माध्यमसे प्रतीकोंका उपयोग किया।

सुमनजी के कवितामें प्राप्त होनेवाले प्रतीकोंको चार भागोंमें विभाजित किया जाता हैं।

1. **संस्कृतिदर्शक प्रतीक** - कवि सुमन को हिंदू संस्कृति के प्रति अपार आदर तथा, उससे वह प्रभावित है। कवि जब क्रांतिकारी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता है तो प्रतीकोंका सहारा लेता है।

भारतीय संस्कृति हिंदू संस्कृति का मूलाधार है, और उसके पौराणिक ग्रंथ, रामायण, महाभारत, भागवत आदि का स्थान महत्वपूर्ण हैं। इन पौराणिक ग्रंथोंमें मानव जीवन के अनेक आदर्श बताये गये हैं, इन सभी का प्रभाव सुमनजी के काव्यपर पूर्ण रुपसे पड़ा हैं। अतः कवि ने इन पौराणिक कथाओं को या उसमें बताएँ गए आदर्शोंको अपने नवीन प्रतीकात्मक भावबोध का माध्यम बनया हैं।

सुमनजी ने हिंदू संसकृति से जो प्रतीक ग्रहण किए है, उनमें रामायण, महाभारत, भागवत के आख्यानों का आधार लिया हैं।

क) **रामायण पर आधारित प्रतीक** - रामायण की कथा को लेकर सुमनजी ने ऐस प्रतीकोंकी योजना की है, जो आधुनिक युगकी सामाजिक समस्याओंको समझनेमें सहायक हो। इसप्रकार प्रतीक विधान की विशेषता यह हैंकि, आधुनिक जटिल प्रश्नोंका समाधान अतित के द्वारा किया जाता हैं। लेकिन अतित की घटनाओं से प्रतीक ग्रहण करनेपर भी कवि सुमनजीका प्रतीक विधान आधुनिक दृष्टिकोण रखता हैं।

रामायण की प्रतीकों के रुपमें सीता को पुण्यात्मा का प्रतीक, रावण को शोषक, क्रूर, पापी के रुपमें तथा श्रीराम को मानवता का रक्षक के रुपमें चित्रित किया हैं।

जब महात्मा गांधी की हत्या हुई यह परम पवित्र सीता जी का भी वध किया हैं। उदा.

'यह वध है पुण्य-प्रसूधरती की, परम पुनीता सीता का
यह वध युग-युग के काल पुरुष वासुदेवका, गीता का।' 1

कविने बापू की हत्या को युग पुरुष की हत्या माना हैं। युगधर्म और युग परंपरामें सामंजस्य स्थापित करने के लिए अनेक महापुरुषोंने जन्म लिया, उसमें एक गांधीजी थे। कवि ने गांधीजीके हत्यारे को रावण की उपमा दी हैं।

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 102

देखिए, 'रावण का कारण बीज नष्ट करने को उद्यत वसुंधरा
मिट नहीं सकेगी शांति स्नेह समता की निर्मल परंपरा।' 1

कवि का कहना हैंकि, शांति, स्नेह, समता की पवित्र परंपरा रावण रुपी पापी के कारण नष्ट होने की संभावना हैं।

कवि सुमन ने दीनहीन तथा लाचार लोगोंपर जो अन्याय होता है, उन लोगोंको जनकसुता सीता के रुपमें चित्रित किया। वे कहते हैं -

'प्रभुता के मदमें मदमाते
पशुता के अभिमानी
बलात्कार धरती की बेटी से
करने की ठानी।' 2

कवि सुमन ने रामको एक क्रांतिकारी प्रतीक के रुपमें और रावण को पूँजीपति के रुपमें तथा क्रुर शासक के रुपमें वर्णित किया हैं।

'धरा को कैद कर आराम से वह रह न सकता था
मनुज इस क्रुर शोषण को बहुत दिन सह न सकता था
स्वयं अन्याय ने पीडित दलित को ला जुटाया था
प्रवासी राम ने विद्रोह का बीड़ा उठाया था।' 3

2. **महाभारत पर आधारित प्रतीक** - महाभारत के विविध कथाओंके प्रसंगोंसे कवि ने प्रतीक ग्रहण किये हैं। महाभारत की प्रमुख घटना दुःशासन द्वारा द्रौपदीका चीरहरण का भी प्रतीक के रुपमें प्रयोग किया हैं। कवि सुमन की कविता 'पर आँख नहीं भरी' में महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और उनका कार्य इसके मूल्यांकन की दृष्टिसे इस प्रतीक का उपयोग किया गया। विदेशी शासनमें अबलाओं का सत्वहरण करनेवालोंके दुष्कृत्यों को रोकनेवाले बापू के प्रतिमा की महत्ता प्रतिपादन करने के लिए इस प्रतीक का उपयोग किया। उदा.

'नंगे फकीर
नग्नता निरीहों की ढक दी,
ले ढाई गज की धवल चीर

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 109
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 50
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 105

कितनी द्रौपदियों की लज्जा
ली भरी सभामें बचा, वीर
दुर्मुख दुःशासन नत अधीर।' 1

कवि सुमनजीने द्रौपदी, भरी सभा, दुःशासन को प्रतीकोंके रुपमें चित्रित किया। निरीह अबलाओंका प्रतीक द्रौपदी हैं, सभा समाज का प्रतीक है, और दुःशासन अन्यायी, अत्याचारी लोगोंका प्रतीक हैं। इसप्रकार कविने इन प्रतीकोंके माध्यमसे उस समाज की दुर्व्यवस्था का निर्देश किया है, जिसमें नारी जातिपर अत्याचार किये जाते हैं।

गांधीजी के निधन पर लिखी गई कवितामें कवि महाभारत के दुर्योधन को हिंसावादी तथा हत्यारे के रुपमें चित्रित किया हैं। यहाँ दुर्योधन समाज विरोधी के रुपमें चित्रित हैं -

'जब तक दुर्योधन घर-घरमें
चिर-सत्य-अहिंसा प्रती रथी
पथ पर कैसे रुक सकता है?।' 2

कवि सुमन ने उसी कवितामें दुर्योधन को महात्मा के हत्यारे नथुराम गोड्से के प्रतीक के रुपमें चित्रित किया है -

'वह उस परंपरा का जिसमें
रावण जीते और कंस हुए
जिसमें दुर्योधन हिरण्यकश्यप
औ जारों के वंश हुए।' 3

3. **भागवत तथा अन्य पौराणिक कथाओंपर आधारित प्रतीक** - कवि सुमन ने भागवत तथा अन्य पौराणिक कथाओंका प्रतीक के रुपमें अधिक प्रयोग किया हैं। देव और राक्षसोंने जब सागर मंथन किया तब पहले विष निकल आया, उससे जग को बचाने के लिए भगवान शंकरने वह विष पी लिया। 'महात्माजी के महानिर्वाण पर' नामक कवितामें कवि ने महात्मा गांधी को महादेव का रुप माना हैं। यहाँपर शंकर का विष पीना गांधीजीके आत्मबलिदान का प्रतीक हैं। देखिए -

'पी गए हलाहल जिससे
सदियों तक जग अमृत पिया करे
दे गये आयु बाकी
जिससे मानवता युग युग जिया करे।' 4

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 90
2. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 97
3. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 100
4. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 98

एक स्थानपर कवि संघर्ष तथा जातिधर्म से व्याप्त मानव समाज का रक्षण करने के लिए शंकर के समान विषमताओं का विषपान करने के लिए किसी त्यागी व्यक्ति की प्रतिक्षा करता हैं। कवि को विश्वास हैंकि, एक दिन ऐसी महान आत्मा अवतार लेगी, जिससे मानवता की रक्षा होगी।

'व्योम क्षुब्ध, धरणी त्रस्त, भीतचल अचल
सुर-असुर मथित-जलधि उगल रहा गरल
चाहिए नवीन नीलकंठ अवतरण
पी सके, पचा सके विषम तरल-अनल।' 1

कवि सुमन ने स्वर्गीय गुरु रवींद्र के प्रति अपनी श्रध्दा प्रकट करते हुए उनकी काव्य साधनाको भगीरथ के अमर तपस्या कहा हैं।

'आर्य संस्कृति के प्रतीक तुम युग के संचित ज्ञान,
भगीरथ की अमर तपस्या गौतम के निर्वाण।' 2

उसी तरह कवि ने राजा शिबि के त्यागमय और अहिंसा वृत्ति को भारतीय संस्कृतिके प्रतीक के रुपमें स्वीकार किया हैं। कवि कहता हैंकि, कसाईखाना भारत के लिए एक चुनौती हैं -

'भारत को बहुत बडी चुनौती है
जिसने कबूतरों को बचाया था बाजोंसे
अपना गोश्त तौल दिया था
तराजू के पलड़ोंपर।' 3

इसीप्रकार कवि सुमनने चंडी को शक्ति के प्रतीक के रुपमें पूतना को मायाविनी के प्रतीक में, और लोक कल्याणार्थ अपनी रीढ़ की हड्डी इंद्रको दान के रुपमें देनेवाले दधीचि ऋषि को त्यागएवं बलिदान के प्रतीक के रुपमें चित्रित किया हैं।

समाज जीवनसे उदधृत प्रतीक -

कवि सुमन ने अपने आधुनिक विचारों को व्यक्त करने के लिए सामाजिक जीवनसे प्रतीकोंको चुन लिया हैं। महात्मा गांधी को उच्च गुणों के प्रतीक के रुपमें स्वीकार किया।

उदा.

'यह वध है शांति अहिंसा
श्रध्दा, क्षमा, दया, तप, समता का
यह वध है करुणामयी
सिसकती दुखिया माँ की ममता का।' 4

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 10
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 48
3. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 75
4. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 101

उसी प्रेमचंद को श्रमिक वर्ग के श्रम तथा युग संघर्ष के प्रतीक के रुपमें चुना हैं। उदा.

'तुम श्रमिक वर्ग के श्रम सजीव,
नवयुग संघर्षों का प्रतीक
किस ओर प्रगतिका पथ प्रशस्त
तुम दिखा गए हो अमर - लोक।' 1

इस प्रकार जग के उपेक्षित शोषित दीन मानव के प्रति सहानुभूति की भावना भी प्रतीक के रुपमें कवि ने व्यक्त की है। 'कंकड़ पत्थर' कवितामें, कवि पत्थर को उपेक्षित, तिरस्कृत मानवता के रुपमें ग्रहण करता हैं -

मैं पथ का कंकड़ पत्थर हूँ
जानें किस शिल्पी की टाँकी से
टकराकर मैं चूर हुआ
अपने विशाल गिरि गृह कुटुंब से
छिन्न भिन्न हो दूर हुआ।' 2

'वाणी की व्यथा' काव्यसंग्रह की कविता 'प्रायश्चित' में कवि सुमनजीने 'बापू की रामराज्य' की कल्पना को प्रतीक के रुपमें ग्रहण किया हैं -

'प्रतीक रामराज्य का
दकियानूसी समझे हम
सूझा ही नहीं मर्म
मार्मिक तपस्या का
बूझ ही न पाए कि तुम
देखते थे, शताब्दियों के आर-पार।' 3

इसप्रकार कवि ने अपने अन्य काव्यसंग्रहों में भी प्रतीक का सुंदर वर्णन किया हैं। सुमनजी की कवितामें समाज के विविध पहलुओंका चित्रण प्रतीकों के माध्यमसे हुआ हैं। कहींपर सुमनजी ने प्रेमसंबंधी विचार प्रगट करने के लिए प्रतीकोंका सहारा लिया हैं।

प्रगतिवादी प्रतिक -

कवि सुमन ने अपनी प्रगतिवादी कविताओंमें प्राचीन प्रतिकोंको आधुनिक रुपमें दिखाया हैं। कविने क्रांति, आग, सर्वहारा धरती आदि शब्दों को प्रगतिवादी अर्थ दिया हैं। प्राचीन कालमें जो तिनका जो निरर्थक था, उसे शोषित मनुष्योंका प्रतीक बनाकर प्रतिष्ठा दी।

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 57
2. डॉ. सुमन - पलयसृजन - पृष्ठ 18
3. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 17

डॉ. प्रभाकर श्रोत्रियने सुमनजी के काव्यमें आए प्रगतिवादी प्रतीकोंको इस प्रकार दर्शाया है।

अमा	=	शोषक युग
ऊषा	=	जन जागरण
हाय हाय	=	शोषितों का आर्थिक त्रास
प्रलय	=	क्रांति
सिंधु	=	जनसमूह
अंधड	=	क्रांति
रोटी	=	अधिकार या भाग
शाम	=	अभावग्रस्त जीवन
हड्डी के ढाँचे	=	दरिद्री मनुष्य
बूँद	=	दलित मानव
उलूक	=	शोषक वर्ग
विहान	=	समतावादी युग।' 1

उपर्युक्त प्रगतिवादी प्रतीकोंमें से अधिकतर प्रतीक सुमन जी के काव्यमें आ गये है, उनमें कुछ

उदाहरण -

'मानव की छाती पर बैठा
झूमा रहा धनुष मतवाला
सींग पूछ से हीन पशु बना
खींच रहा है रिक्शावाला
मुँह से झाग स्वेद तन से
ठोकर खा खाकर गिरता जाता
हाय नहीं वह देखा जाता।' 2

'अमा' 'शोषक युग का प्रतीक

'जलना है, जलना है
अमा का अंधेरा तो
छलना है छलना है।' 3

'प्रलय' क्रांति का प्रतीक -

'प्रलय सृजन का अविरत क्रम
क्या रोकेंगे उन्चास प्रभंजन।' 4

---

1. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन मनुष्य और स्रष्टा - पृष्ठ 111-112
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 83
3. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 31
4. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 13

'सिंधु' — 'जनसमूह' का प्रतीक -
'आज सिंधुने विष उगला है
आज हृदयमें और सिंधुमें
साथ उठा है ज्वार
तूफानों की ओर घुमा दो
नाविक निज पतवार।' 1

'ऊषा' — 'जन जागरण' का प्रतीक -
'मेरी ही पँखुडियों को छू
ऊषा का यौवन जागा है
इसमें सुरुप भी, सौरभ भी।' 2

इसके अलावा लोकगीत शैली का भी प्रतीक के रुपमें उपयोग किया हैं -

'लाओ लाओ सब अपनी पिचकारियाँ
उषा की लाली भर लो पिचकारी में
कोयल की गाली भर लो पिचकारी में
माली की डाली भर लो पिचकारी में।' 3

इसमें उषा की लाली, अदि शब्दोंमें प्रतीक का प्रयोग कविने किया हैं।

भाषा :-

संदर भावोंके व्यक्त करने के लिए सुंदर भाषा की आवश्यकता होती हैं। कामता प्रसाद गुरु के शब्दोंमें - 'भाषा अनेक पूर्ण और स्पष्ट विचारोंके मेल से बनती है और प्रत्येक पूर्ण विचारमें कई भावनाएँ रहती हैं। प्रत्येक पूर्ण विचार को वाक्य और प्रत्येक भावना को शब्द कहते हैं।'4 इसप्रकार भाषा के विषयमें अन्य विद्वानोंने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

सुमनजी की भाषा विशुध्द खडी बोली हैं। कवि ने प्रसंगानुसार संस्कृत, तत्सम, तद्भव हिंदी के ठेठ शब्द, उर्दू फारसी, अंग्रेजी के शब्दोंका प्रयोग किया। इससे हमें ज्ञात होता हैं कविका शब्दभंडार विस्तृत हैं। सुमनजीने अपने काव्यमें ग्रामीण भाषा का भी प्रयोग किया हैं।

इसके अलावा अन्य शब्द इसप्रकार हैं -

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 46
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 49
3. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 22
4. कामता प्रसाद गुरु - हिन्दी व्याकरण - पृष्ठ 1

1. **संस्कृत शब्द** - आशा, अपूर्ण, प्रवाह, जीवन, अनुराग, शाश्वत, गरल, अंर्तमन, कपोल मुद्रा, नित्य, रंध्र, उग्र, मर्म।

2. **तद्भव शब्द** - उसाँस, थाली, आस, सूना, सामने, नजर, गोद हास, नया, आग, बालु, सपनों, जमुना।

3. **उर्दू फारसी शब्द** - दुनिया, जहर, राज, इनकलाब, खबर, खुदकशी, निहायत, अख्तर, निसार, दकियानूसी, अफसोस।

4. **अंग्रेजी शब्द** - मशीनगन, टैंक, एटमबम, सिगरेट, ग्लेशियर, प्लास्टिक, स्टार्ट।

भाषा की कसौटी पर सुमनजी की भाषा खरी उतरती हैं। सुमन जी की भाषा भाव-विचार संप्रेषणमें सक्षम हैं। जिस प्रकार मनुष्में उदारता, शुरता, आदि गुण होते हैं, उसीतरह काव्यके भाषा के भी माधुर्य, आज प्रसाद गुण होते है।

1. **ओज गुण** - सुमनजी ने अपनी कवितामें ओजगुण प्रधान भाषा का प्रयोग किया हैं। उनकी भाषामें अत्यात्मकता, ओजस्विता, और प्रेषणीयता कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

'मास्को अब भी दूर है' कवितामें ओज गुण दिखाई देता हैं -

'जन-जन जागे, कण कण जागा, जागा लाल सितारा,
चली लालसेना लहराती, लाल रक्त की धारा
कौन लडेगा? कौन बढेगा, कौन साहसी शुर है?
दस हफ्ते दस साल बन गए, मास्को अब भी दूर हैं।' 1

इसप्रकार सुमनजी के अन्य कविताओंमें भी इस गुण का प्रयोग किया गया हैं।

2. **माधुर्य गुण** - चित को विचलित करनेवाला जो आनंद प्रधान गुण है, उसको माधुर्य कहते हैं। यह गुण श्रृंगार, करुण, विप्रलंभ शांतमें बढता जाता हैं।

सुमनजी की प्रणयसंबंधी कविताओंमें माधुर्य गुण मिलता है। उस अवसर पर उनकी भाषा कोमल, मधुर और भावपूर्ण बन जाती हैं। पाठकपर एक मोहक प्रभाव डालनेमें वह सक्षम हो जाती है। जैसे -

मैं प्रतिक्षारत धो रहा पथ
हंसमाला मुक्त बंदनवार
शस्य-पामर-पारु, श्लथ शेफालिका का हार

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 62-63

आ रही होगी उड़ाती नील अंचल'

माधुर्य गुण सुमनजी की कवितामें विशेषतः पाया जाता हैं। क्योंकि कवि की प्रारंभिक रचनाएँ प्रणय संबंधी थी। उदा. 'हिल्लोल, पर आँख नहीं भरी, विंध्य हिमालय' काव्यसंग्रहमें यह गुण पाया जाता हैं। इन संग्रहोंमें कवि ने संयोग, वियोग, करुण रस से संबंधित कविताएँ लिखी हैं। 'प्रलयसृजन' और 'जीवन के गान' में करुण रस का प्रयोग मिलता हैं।

3. **प्रसाद गुण** - बाबु गुलाबराय ने प्रसाद गुण का लक्षण इस प्रकार दिया हैं -

'नवरव में उज्ज्वल सलित, स्वच्छ अग्नि के रुप
तो प्रसाद रचना वरन, इनको कहो अनूप।' ।

जो रचना चित में शीघ्र व्याप्त हो जाती है वह हैं प्रसाद गुण से युक्त रचना। यह गुण संपूर्ण रसों और रचनाओंमें हो सकता हैं। जिन पदोंद्वारा सुनते ही अर्थ प्रतीत हो जाए वह सरल सुबोध पद प्रसाद गुण के व्यंजक होते हैं।' 2

'विंध्य हिमालय' काव्यसंग्रह की कविता 'काठमांडू की पहली साँझ' में प्रसाद गुण दिखाई देता हैं

'न जाने बात क्या है
साँझ होते ही
तुम्हारी याद आती है
लजीली ललिमा के पार
सपनों की तरी सी तैर जाती हैं।' 3

सुमनजी काठमांडु पहुँचनेपर शामको अपनी सहधर्मिणी का स्मरण करते हैं।

शब्दशक्ति :-

'शब्द शक्ति वह शक्ति है, जिसके द्वारा शब्द का प्रसंगानुसार वांछित अर्थ प्राप्त होता हैं।' 4

काव्यशास्त्र के आचार्योंने शब्द तीन प्रकार के माने हैं, वाचक शब्द, व्यंजक शब्द, लाक्षणिक शब्द। अर्थ को प्रकाशित करने के लिए तीन प्रकार की शक्तियाँ मानी है - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

अभिधा शब्द शक्ति - किसी पद के सांकेतिक अथवा प्रसिध्द अथका बोध करानेवाले व्यापार को अभिधा कहते हैं।

---

1. डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र - डॉ शिवमंगलसिंह सुमन की कृतियोंका समीक्षात्मक अध्ययन से उधृत-पृ. 158
2. डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र-डॉ.शिवमंगलसिंह सुमन की कृतियोंका समीक्षात्मक अध्ययन से उधृत-पृष्ठ 158
3. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय
4. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी - रसदोष छंद अलंकार निरुपण - पृष्ठ 184

इस शब्दशक्ति के विषयमें पं. रामचंद्र शुक्ल का मत हैंकि, 'अब प्रश्न यह कि काव्य की रमणीयता किसमें रहती है? वाच्यार्थ में, लक्ष्यार्थमें या व्यंग्यार्थ में? इसका बेधड़क उत्तर यहीं हैंकि, वाच्यार्थ में चाहे वह योग्य और उत्पन्न हो अथवा अयोग्य और अनुत्पन्न। मेरा यह कथन विरोधाभास या चमत्कार दिखाने के लिए नहीं है, सोलह आने ठीक हैं। वह काव्य नहीं, काव्य को धारण करनेवाला सत्य है, जिसकी देखरेख में काव्य मनमानी क्रीड़ा कर सकता हैं।

पं. रामचंद्र शुक्लजी ने अभिधापर विशेष बल दिया हैं। भाषा सुमनजी की अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। कवि सामान्य जनता तक, जो निम्नस्तरपर है, जिनका किसी को ध्यान नहीं, उनतक अपने विचारोंको पहुँचाना चाहता हैं। सुमनजी की भाषा कृत्रिमता को छोड़कर अपने स्वाभाविक रुपमें जनता के सम्मुख प्रकट होती हैं। सुमनजी का मत हैंकि अगर जटिल भाषामें कविता लिखी जाय तो वह केवल बुध्दिजीवियों की अमानत होगी, जन सामान्य उसे देख भी न सकता। अतः जनता को अगर शिक्षित, जागृत करना हो तो, उन्हीं की बोलचाल की भाषा में रचना लिखी जाय। इसी उद्देश से सुमनजीने अपनी अधिकांश कविताओंमें सरल, स्वाभाविक और अभिधात्मक भाषा का प्रयोग किया हैं। सरलता, सुबोधता, स्वाभाविकता, स्पष्ट आदि सुमनजी के भाषा की विशेषताएँ हैं।

इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य हैं -

'मेरे मटमैले अँगना में, फुदक रही गौरय्या,
कच्ची मिट्टी की दीवारे, घास पात का छाजन
मैंने अपना नीड़ बनाया, तिनके-तिनके चुन चुन
यहाँ कहाँ से तू आ बैठी, हरियाली की रानी
जी करता है तुझे चूमलूँ लेलूँ मधुर बलमया
मेरे मटमैले आँगन, फुदक रही गौरय्या।' [1]

सुमनजी को अभिधा कवि कहा जाता हैं, क्योंकि यह अपनी बात सीधे जन सामान्योंतक पहुँचाना चाहते हैं। शोषितों की दशा का वर्णन इसप्रकार अभिधात्मक शैली में हैं -

'उससे भी भीषण जब मानव
व्याकुल भूख-भूख चिल्लाता
अपने ही बच्चे की रोटी छीन
उदर की ज्वाला बुझाता
बच्चा बेबस रोता रोता

---

1. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 96

भूखा तड़प-तड़प मर जाता
हाय नहीं यह देखा जाता।' 1

अभिधा के द्वारा काव्यसौंदर्य की निर्मिती करना कवि की महान शक्तिपर निर्भर होता हैं। अभिधामें प्रसाद गुण अधिक मात्रामें होता है, जो कवि और पाठकको सामान्य धरातल पर ले आता हैं। अभिधाका सौंदर्य स्वभावोक्तिके कारण ही विकसित होता है, इसका उदाहरण देखिए -

'आँख उसने भी उठाई, कुछ तीन, कुछ मुसकराई
रो रहा होगा लखनवा, भूख से वह बड़बडाई
हँस दिया दे एक ठूँठा भी बनावट था न रुठा
याद आई कामकी, पकड़ा कुदाली, काष्ठा-मूड़ा
खप्प-खप चलने लगी
चिर संगिनी की होडवाली
चल रही उसकी कुदाली।' 2

अभिधा की सुंदरता का दूसरा रुप स्वाभाविक चित्रणमें प्रकट होता हैं -

'कहते हैं दुनिया आनी-जानी है
कहते हैं जीवन बहता पानी है
कहते हैं अनगढ रीति जवानी है
कहते हैं असफल प्रति कहानी हैं।' 3

इसीप्रकार विश्वास बढता ही गया, पर आँख नहीं भरी, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा काव्यसंग्रहमें अभिधात्मक शब्द शक्ति की छटा दृष्टिगत होती हैं।

2. लक्षणा :-

जहाँपर साधारण अर्थमें बाधा पड़े और किसी प्रचलित रुढ़ि अथवा विशेष प्रयोजन के आधार लगाया जाता है इसे लक्षणा शक्ति कहते हैं। 'मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होनेपर रुढि अथवा प्रयोजन से मुख्यार्थ से संबंधित अन्य अर्थ जिस शब्द शक्ति से लिया जाता है, उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं।' 4

काव्यकी शोभा बढानेमें लक्षण शक्ति का अपना एक विशेष स्थान रखती हैं। पहले हमने कहा की, सुमनजी की काव्य सौंदर्य अभिधागत है, इसका अर्थ यह नहीं कि, कवि लक्षणा शक्ति के प्रति

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 29
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 23
3. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 43
4. डॉ. राजेश्वर चतुर्वेदी - रसदोष छंद अलंकार निरुपण - पृष्ठ 187

विरक्त हैं। लेकिन जब अर्थ विशेष किसी समय संकुचित हो जाता है और अभिधा की सीमाएँ उसे सँभल नहीं सकती, तो लक्षणा का सहारा लेकर वह संपूर्ण विकसित होता हैं।

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन ने लक्षणा शक्ति को प्रतीकों और शब्द चित्रों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया हैं। इसी अध्याय के शैली विधानमें प्रतीकात्मक शैली की विस्तृत चर्चा हमने की है, यहाँपर संक्षिप्त रुपसे इसका वर्णन करेंगे।

डॉ. सुमनजीने अपनी कवितामें अनेक स्थानों पर आवश्यकता के अनुसार प्रतीकात्मक अथवा सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया हैं। ऐसी भाषामें पौराणिक या ऐतिहासिक घटनाओं या व्यक्तियों की ओर संकेत किया गया हैं। इससे कवि की भाषामें प्रेषणीयता की शक्ति आ गई है। उदा.

'मेरे दधीचि
तुम बार बार अस्थियाँ लुटान को आतुर
ऐश्वर्य मान पद मोह छोड़
जन-जन के लिए विधुर कातर।' 1

कवि गांधीजी को दधीचि के रुपमें देखता है, क्योंकि असुरोंको मारने के लिए जिस प्रकार दधीचि ने अपनी रीढ़ की हड्डी दे दी उसी प्रकार गांधीजी ने भी जनता के लिए अनेक यातनाएँ सही।

'दिनकर' के 'आकस्मिक अवसान पर' नामक कवितामें कवि ने दिनकर याने सूर्य के लिए पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग किया हैं। उदा.

'जीवन भर
जोधा का जाना उतारा नहीं
अंगद के पाँव सा
अठा रहा संजुग में
पलकें बिछाए
परशुराम की प्रतीक्षा में।' 2

कवि सुमनजी ने ऐतिहासिक प्रतीकों का बड़ा सुंदर चित्रण किया है। देखिए -

'इसके ही पुलिनों पर
अशोक प्रियदर्शी ने
पहला आचमन किया
विश्व-जीव-मैत्री के पावन उद्घोषों का
इसके ही पावन पाथ से प्रक्षालित

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 93
2. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 75

बोधिवृक्षा परंपरा प्रथम प्रवहमान हुई
महेंद्र संघमित्रा का
स्फुटित पद्म कोरकों सा संचरण सिंधु पार
देख देख सप्त सिंधु
हुए होंगे विस्मय विमुग्ध।' 1.

इन प्रतीकों के काव्यमें मनोहरता एवं सुंदरता का समावेश हो जाता हैं। उपर्युक्त पद्य खंडमें अशोक, महेंद्र और संघमित्रा आदि जैसे ऐतिहासिक पात्रों का प्रतीक के रुपमें वर्णन किया गया हैं।

सुमन जी ने अपने अमूल्य विचारोंको सामान्य जनता के समक्ष सरल एवं सुबोध रुपमें प्रकट करने के लिए उन्हें शब्दचित्रों अथवा बिंबों के द्वारा व्यक्त करनेका सफल प्रयत्न किया हैं।

सुमनजी ने भाषा की चित्रात्मकता का सुंदर तालमेल प्रस्तुत किया गया हैं। भाषा को सरल, सुबोध और सरस बनाने के लिए कवि सुमन ने लक्षणा शक्तिका भरपूर उपयोग किया हैं। इस लाक्षणिक शक्तिके अंतर्गत इन्होंने प्रतीकों बिंबों एवं शब्दचित्रोंका सहारा लिया हैं। कविने अपने सभी काव्यसंग्रहोंमें इस शक्ति का प्रयोग किया हैं।

3. **व्यंजना :-**

अभिधा और लक्षणा के शांत होनेपर जिस शब्द शक्तिसे व्यंग्यार्थ की प्राप्ती होती है उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं।

आधुनिक प्रवृत्ति के प्रभाव से व्यंजना सुमन के काव्य की शैली बनी हैं। व्यंजना विधान की प्रेरणा इस युगमें वैषम्यों और आक्रोशों से मिलती हैं। वैज्ञानिक सभ्यता स्वातंत्र्योत्तर गांधीवादी कृत्रिम आध्यात्मिकता तथाकथित नेता, कुछ ऐसे विषय है जहाँ कविने व्यंग्य का सहारा लिया हैं।

'बडी संजीदगी से जिंदगी के जाम गढ़ते हो
सुबह जब चाय के संग आदतन अखबार पढ़ते हो
खबर पर नजर जाती है कि उजड़े धानिया आंचल
घटाएँ नित्य घिरती हैं, पिघलते पर नहीं बादल।' 2.

इसमें कविने व्यंजना शक्तिका आधार लिया हैं। गरीबों की उजड़ती हुई दुनियाँ को देखकर और समाचार पत्रोंमें उसे पढ़कर उससे आनाकानी करते हैं। अंतिम पंक्ति 'पिघलते पर नहीं' का अर्थ हैंकि,

---

1. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 3।
2. डॉ. सुमन - वाणी की व्यथा - पृष्ठ 12

उनके हृदयमें प्रेम, व्यथा, परोपकार की भावना छू भी नहीं सकती।

'मिट्टी की बारात' काव्यसंग्रह की 'कसाईखाना' कविता में सुमन जीने भारतीय संस्कृति की झलक व्यंजना शक्ति के माध्यम से व्यक्त की हैं-

'रोडेशिया में कसाइयों की दूकानें
सजी-बजी हैं सरे आम
पाँच-पाँच कंकाल लटक रहे हैं
जिनका गोश्त बिक रहा है सरे बाजार
इंसान बकरों का खाना छोड रहा है
उसकी जीभ में इंसानी खून लग गया है
भारतको बडी चुनौती है
जिसने कबूतरों को बचाया था बाजोंसे
अपना गोश्त तोल दिया था
अणुबम की औकात उसे मालुम हैं।' 1

डॉ. सुमन सामान्य जनता के कवि हैं। इसलियें उन्होंने अपनी भावनाओंको सीधे और सरल शब्दोंमें व्यक्त किया हैं। सुमन के काव्यमें सर्वत्र अभिधात्मक शक्ति का प्रयोग हुआ हैं। भाषामें सुंदरता लाने के लिए उन्होंने लक्षणा का उपयोग किया है। इससे सुमन की भाषामें खुमारता आ गयी हैं।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक बुराइयों को जनता तक पहुँचाने के लिए कविनें व्यंग्य का सहारा लिया। इस व्यंग्य में उन्होंने व्यंजना का प्रयोग किया। व्यंजना शक्ति सुमन जी के लगभग सभी काव्यसंग्रहोंमें विद्यमान हैं।

डॉ. शिवमंगलसिंह की भाषा प्रसंगानुसार बदलती हैं। भाषापर सामाजिक, राजनैतिक, सामाजिक, सामयिक और भौगलिक आदि बातोंका प्रभाव भी पडता हैं। भाषा भावों और विचारोंके अनुसार बदलती हैं।

सुमनजी ने जिस प्रसंगमें कविता का सृजन किया, भाषा भी उसी ढंगसे प्रस्तुत की। जैसे -

अच्छे तो मालिकौ रहयो, कहा उसने
हा अच्छा हूँ तुमनीका तना रहयू
वह पथपर फिर मिल गई
कहा - चल दीन्हयौ का? मालीको जुहार।' 2

---

1. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 75
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 29-30

इसतरह अच्छे तो मालीकौ रहयौ और तुम नीको तना रहयू आदि वाक्य ग्रामीण परिवेशमें प्रस्तुत किये हैं। सुसंस्कृत लोगों के लिए परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया हैं। सुमनजी ने भाषा को सरल, सुबोध एवं सहज ढंग से प्रस्तुत किया हैं। उनकी भाषामें लोच हैं। भाषा की कसौटीपर सुमनजी की भाषा खरी उतरती हैं।

बिंब संयोजन :-

बिंब रचना काव्य का मुख्य आधार हैं। बिंबों के द्वारा कवि वस्तु, घटना व्यापर गुण विशेषता विचार आदि साकार तथा निराकार पदार्थों और मानसिक क्रियाको इंद्रिय ग्राह्य बनता हैं। डॉ. भगीरथ मिश्र ने बिंब विधान की परिभाषा इस प्रकार दी हैं -

'वस्तु, भाव या विचार को कल्पना एवं मानसिक क्रिया के माध्यमसे इंद्रियगम्य बनानेवाला व्यापार ही बिंब विधान हैं।' 1

सुमनजी के काव्यमें विविध प्रकारके बिंबोंकी निर्मिती हुई हैं। दृश्य बिंब, स्पर्श बिंब, ध्वनिबिंब, घ्राण बिंब, रस बिंब।

1. **दृश्य बिंब** - किसी वस्तु को स्पष्ट करने के लिए दृश्य बिंबोंकी योजना की जाती हैं। यह बिंब रंग प्रधान हैं।

सुमनजीने अपने सूक्ष्म तथा अमूर्त विचारोंको जिस जगह बोधगम्य, सजीव, एवं सदिय बनाने की आवश्यकता का अनुभव किया, वहाँपर उन्होंने दृश्यबिंब का उपयोग किया। इस बिंबके द्वारा कवि की व्यापक अनुभूति व्यक्त होती हैं। इससे काव्यसौंदर्य विकसित होकर उसमें सजीवता तथा मार्मिकता प्राप्त होती हैं। इस संदर्भ में सुमनजी के 'हिल्लोल' काव्यसंग्रह के एक कविता का उदाहरण देखिए -

'आज कुंकुम रोचना से थाल ऊषा ने सजाया
आज नव रवि समुद अपने साथ हीरक हार लाया
आज प्रकृतिवधू सजीली सज उठी बन ठन निराली
आज माणिक मोतियाँ बिखरा रही मानस मराली
आज शुभ अभिषेक का सब आज उषा साज लाई
आज अलि उनको बधाई।' 2

---

1. डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र - पृष्ठ 252
2. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 7।

उपर्युक्त पंक्तियोंमें प्रकृति वधू की निराली छटा को आँखो के सामने चित्रित किया।

कवि ने मानव जीवन के आर्थिक वैषम्य के चित्रों को दृश्यात्मक बिंबों के माध्यमसे व्यक्त किया।

'मानव के छाती पर बैठा
झूम रहा दानव मतवाला
सींग पूँछ से हीन पशु बना
खींच रहा हैं रिक्शावाला
मुँह से झाँग स्वेद तन से
ठोकर खा खाकर गिरता जाता
हाय नहीं यह देखा जाता।' 1

आर्थिक वैषम्य से निर्माण होनेवाली शोषण की प्रक्रिया के कारण समाज में इन्सानपर इन्सानद्वारा होनेवाले पाशविक व्यापार को वर्णित करते हुए कवि सुमन कहते हैंकि, समाज का एक वर्ग इतना धनवान हैंकि वह नित विलासमें मग्न रहा हैं। दूसरा वर्ग भिक्षुक बनकर धनवानों के पालतू कुत्ते हड़प जाते हैं। देखिए -

'मेरे युग में हाय, मिट गई
नर पशु के अंतर की रेखा
मानव श्वान एक टुकडे पर
टूट रहे वह दिन भी देखा।' 2

इसतरह वर्तमान समाजमें श्वान और मानवमें कोई अंतर नहीं रहा। आने इन विचारोंको कवि ने दृश्य बिंब के द्वारा व्यक्त किया।

2. **स्पर्श बिंब** - कवि सुमन ने स्पर्श संवेदना के सहयोग से स्पर्श बिंब का निर्माण किया। जिन बिंबों का बोध स्पर्शेंद्रिय के माध्यम से सरलता से संभव होता है, उसे स्पर्श बिंब कहा जाता हैं। सुमन जी ने प्रेम की मादक अनुभूतिको व्यक्त करने के लिए स्पर्श बिंबका प्रयास किया। उदा.

'वह भी दिन था मेरे पथ पर जब प्रियने रंग रलियाँ की थी,
गोल गोल गोरी बाहोंसे ग्रीवामें गलबाहियाँ दी थी,
उनकी मोहक मादकता से मदहोशी जगती ने ली थी
अनजाने में ही आँखोने अपनी झोली फैला दी थी।'

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 38
2. डॉ. सुमन - विश्वास बढ़ता ही गया - पृष्ठ 89
3. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 79

इन पंक्तियोंमें किशोरावस्था की मादक स्थिति का वर्णन किया है, प्रेमी और प्रेमिका अधीर होकर एक दूसरे व्यक्तित्वमें खो जाना चाहते हैं। इसी समय वे एक दूसरे के अलिंगनमें खोकर पुलक स्पर्श से मधुर अनुभूतियें डूब जाते हैं, इसके आगे की दशा स्पष्ट हुए सुमन जी लिखते हैंकि,

'युग युग के प्यासे प्राणोंने
अमर सुधा रसपान किया था
नयनों ने नयनों से मिलकर
अपनापन पहचान लिया था।' ।

प्रेमी और प्रेयसी के मन आनंद में डूब जाते हैं और प्रेमी के अधर प्रेयसी के अधरों के मधुर स्पर्श के लिए व्याकुल हो उठते हैं। इस प्रेममें स्पर्श बिंब का सजीव चित्र मिलता हैं। इसी प्रकार 'मुनिया का यौवन' में कविने स्पर्श बिंब का उदाहरण दिया हैंकि,

'आ गयी याद अमराई भी
यौवन के पथ पर प्रथम चरण
जब आम लूटने के मिस
अधरों से अधरों का हुवा मिलन।' 2

3. **ध्वनि बिंब** - जिन बिंबों को समझने के लिए श्रवणेंद्रिय की आवश्यकता होती है और जिसमें नाद अथवा ध्वनि की कविता में ध्वनिबिंबोंकी भरमार हैं। 'कैसा मधुर सुप्रभात था' कविता में कवि लिखते हैंकि -

'वे भनन भनन करते भ्रमर
सौरभ समेटे पाँख में
उस और बच्चे रो पड़े
कीचड़ लगाये आँखमें
मुँह खोल कुछ झेंपा हुआ सा
हँस रहा जलजात था
कैसा मधुर सुप्रभात था।' 3

दूसरे कवियोंके तरह सुमनजी ने प्रातःकाल का सुंदर वर्णन किया हैं। भवरों भनन भनन की आवाज करते हुए फुलोंपर गुंजन करते हैं। बालक जाग रहे हैं, सुबह का सारा वातावरण सुहावना और मनोरम लगता हैं 'मास्को अब भी दूर हैं' कविता में ध्वनि बिंब के माध्यम से चित्र का आकलन होता हैं।

---

1. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 79
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 29
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 28-29

'घनन घनन घन बादल गरजे
घहर घहर घर तोपें
ज्वाला सजीव टैंक बन, जब धरती पर कोपे
हिली धरा, हिल गया आसमाँ हिला विश्वका कोना
अंतरिक्ष से प्रतिध्वनि आई ऐसा हुआ न होना।' 1

द्वितीय महायुध्दमें हिटलर की सेनाओंसे रुसी सेना जब लड़ने लगी उस समय के चित्रोंको कवि ध्वनि बिंबों के सहारे व्यक्त करता हैं -

'लहरों पै लहर टूट, उठती भूधराकार
पानी भी परशुधार के प्रहार पर प्रहार
अररर छाः अररर छाः
माटी के बंधन सब काट रहीं धार धार
जीर्ण-शीर्ण जर्जर कंकाल जाल जड़ उखाड़ तोड़ हाड़।' 2

इन पंक्तियोंमें कवि ने शब्दों के नाद सौंदर्य के द्वारा ध्वनि बिंबों की सुंदर योजना की हैं।

3. **घ्राण बिंब** - इस वर्ग के अंतर्गत उन बिंबों की गणना की जाती है, जिनका बोध घ्राणेंदिय द्वारा होता हैं। सुमनजी काव्यमें ऐसी बिंबो की योजना कहीं कहीं दिखाई देती हैं। सुमनजी जहाँ एक ओर मधुमय वसंत की वायु फुलों के सुगंधो के बिंब प्रस्तुत करते हैं, वहाँ दूसरी ओर समाज की सड़ी हुई व्यवस्था का भी चित्रण करते हैं।

'उलट तुम्हारी सडी व्यवस्था
डालेंगे वह नींव
फिर न बिसूर-बिसूर कर मरे
नर तन धारी जीव।' 3

जिसप्रकार मनुष्य उपवन को सुगंधित करनेवाले फुलोंको निचोड़कर उनके प्राण रस से अपने तन को सुगंधित करते हैं, उसी प्रकार गावों या झोपडियों के श्रमीक की मेहनत की कमाई से अपने ऐय्याशी के लिए सामग्री जुटानेवाले संपन्न नागरिकों का दृश्य कवि के कविताओंमें उभरकर आया हैं।

इन पंक्तियोंमें समाज की विषमतापूर्ण परिस्थिति बदल कर कवि नव समाजकी नींव डालना चाहता हैं।

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 62
2. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 58
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 33

इन चित्रों के अतिरिक्त कवि ने प्रकृति के माध्यम से भी घ्राण बिंबोंको प्रकट करने का प्रयास किया हैं। जैसे -

'कनक कसेली गंध गमकती
वन-वन, वीथी वीथी
किसकी मटकी छलक उठी है
किसकी रीति रीति?
मदन महोत्सवमें कितना मधु
मुग्ध रसाल लुटाए।' 1

कवि प्रकृति का घ्राण बिंब के द्वारा हृदयंगम चित्र प्रस्तुत करता हैं। 'विंध्य हिमालय, पर आँख नहीं भरी, नामक काव्यसंग्रह में इसप्रकार के बिंब देखने को मिलते हैं। शोषित पीड़ित मानव की बीभत्स दशा का वर्णन 'प्रलयसृजन', 'जीवन के गान' में मिलता है।

5. रस बिंब - जिन बिंबों का बोध रुचि अथवा जिव्हा के द्वारा होता हैं उसे रसबिंब कहते हैं। कवि सुमन की काव्यमें रसबिंब ज्यादा नहीं दिखाई देतें।

'पथ भूल न जाना पथिक कहीं' कवितामें कवि नवयुवकोंको अपने कर्तव्य मार्ग से विमुख न होने का संदेश देता हैं -

'साकीबाला के अधरोंपर
कितने ही मधुर अधर होंगे
प्रत्येक हृदय के कंपन पर
रुनझुन-रुनझुन नूपुर होंगे
पग पायल की झनकारों में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं?।' 2

इसमें साकीबाला के अधरोंपर अन्य मधुर अधरोंका रसपान दिखाया गया हैं। इससे रस बिंब का आभास होता हैं।

जेठ की जलती दोपहरमें एक किसान को खेतमें काम करते देखकर कविके मनमें जो भाव उठते हैं, उसको कवि सुमन ने छंदमें बाँधकर कविता बनायी। उसके खानपान का वर्णन किया, जिसमें रसबिंब का स्वरुप दिखाई देता हैं।

---

1. डॉ. सुमन - विंध्य हिमालय - पृष्ठ 24
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 23

'बैठ जा क्यों खडी है
क्यों नजर तेरी गडी है
आह सुखिया, आज की रोटी
बनी मीठी बडी है
क्या मिलाया सत्य कहरी
बोल क्या हो गई बहरी?
देखना, भगवान चाहेगा
उगेगी खूब जुन्हरी
फिर मिला हमलोन मिरची
भर सकेंगे पेट खाली।' 1

किसान अपनी पत्नी के द्वारा दी सूखी रोटी का स्वाद बड़ा सुंदर बताता हैं। इसमें कविने जिव्हा के द्वारा प्राप्त स्वाद का गुणगान किया हैं। इसप्रकार सुमन जी की अन्य कविताओंमें भी रसबिंब के दर्शन होते हैं।

सुमन जी की कविता वादोंके झगडेमें नहीं पडती, क्योंकि, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, अकविता सब वादों की झलक उनमें प्राप्त होती हैं। फिर भी उनकी रचनाएँ प्रगतिवादी हैं। साधारण तौरपर यह कहा जाता हैकि, प्रगतिवादी कविता शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं होती, लेकिन सुमनजी की रचनाओं का अध्ययन करने के बाद यह कथन निरर्थक लगता हैं। सुमनजी काव्यमें संप्रेषण की महत्ता स्वीकार करते हैं। डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने उन्हें 'भाषा के जौहरी तथा प्रवाह के कवि' घोषित किया हैं।' 2

सुमन जी की भाषा सरल होते हुए भी गंभीर विचारोंको प्रकट करनेमें सशक्त हैं। एक ही शब्द मिट्टी से वे मिट्टी व मिट्टीसे बने मनुष्य की महिमा का वर्णन करता हैं -

'मिट्टी की महिमा मिटने में
मिट मिट हर बार सँवरती हैं
मिट्टी मिट्टी पर मिट्टी है
मिट्टी मिट्टी को रचती हैं।' 3

सुमनजी के कुशल हाथोंमें पडकर हिंदी शब्द की व्यंजना शक्ति भी बढ़ जाती हैं। डॉ.पी.के. बालसुब्रम्हण्यन् लिखते हैं -

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 23
2. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन : मनुष्य और स्त्रष्टा - पृष्ठ 109
3. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 35

डॉ. सुमन के काव्यमें शिल्प और भावका मणिकंचन योग है, जो पाठकोंको प्रभावित करते हैं। 1

डॉ. अरविंद पांडे कहते हैं - ' माधुर्य और ओज का कवि दोनों क्षेत्रोंमें अपनी दीवानगी लिये हुए पहुँचता हैं। इस दीवानगी में एक खुमार होता है, उसी वृत्ति से वह अपने सहज आवेगपूर्ण उद्गारोंको छंदबध्द करता हैं या उन्हें स्वाभाविक रुपसे गतिशील कर देता हैं। भाषा बोलचाल की होते हुएभी कभी संस्कृतकी गंभीरता तो कभी उर्दू की तरफ झुकती हैं। प्रतीकों, रुपकों, बिंबों की छटा सुमनजीकी कवितामें दिखाई देती हैं। सुमनजी की कविता सक्रीय, गतिशील और प्रेरक हैं। भाषा-भाव-विचार संप्रेषणमें सक्षम हैं।' 2

'कवि सुमन की शिल्पकी दृष्टि से सहज भाषा, मुक्त छंद, सामासिक शैली और अनुभूति के स्तरपर अंर्तमुखता और आत्मावलोकन की प्रवृत्ति दिखाई देती हैं।' 3

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित के मतानुसार - 'सुमन के आरंभिक काव्य में उनकी भाषाभिव्यक्ति वस्तुवादी दिखाई देती है और बाद की रचनाओंमें कल्पकता, सौंदर्यप्रेम और सफल शब्द प्रयोग कर्ता। विंध्य हिमालय की कविताओंमें भाव तथा शैली का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ हैं। इन कविताओंका लेखक जैसा संस्कृत के तत्सम शब्दों का संगठन करता हैं, वैसा ही ब्रजभाषा के प्रयोग का उपस्थित करता भी है।' 4

कवि सुमन के गीत मृदुल भावोंमें पदसंचार करते हुए भी जीवन की कठोर व्यवहारभूमि का स्मरण दिला कर चेतना को जागृत किये रहती हैं। उनकी स्वरमें नवीनता हैं और व्यक्तित्व की स्वतंत्रता भी। उनका स्वर किसीका अनुगामी नहीं, वह आत्मबोध और स्वतंत्र व्यक्तित्वका द्योतक हैं।'5

भाषिक सर्जनात्मक दृष्टिसे सुमन जी एक सफल कवि दिखाई देते हैं। उनकी भाषाशैली छंदमें विविधता हैं। उन्होंने मात्रिक, लयात्मक मुक्तछंद और गेय छंद का सुंदर चित्रण अपनी कविता में किया। अपनी कवितामें सुमनजीने संस्कृत के तद्भव, तत्सम शब्दोंके अतिरिक्त उर्दू अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया। सुमनजी ने हिंदी काव्यक्षेत्रमें प्रचलित उद्बोधनात्मक, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक, प्रतीकात्मक तथा लोकगीत शैलीका उपयोग अपने काव्यमें किया हैं। इसीतरह सभी मुख्य अलंकार का प्रयोग भी किया हैं।

---

1. डॉ. पी.के. बालसुब्रम्हण्यन - डॉ.शिवमंगलसिंह सुमन के काव्यमें राष्ट्रीयता - पृष्ठ 149
2. डॉ. अरविंद पांडे - हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प - पृष्ठ 142-143
3. प्रभाकर श्रोत्रिय - सुमन : मनुष्य और स्त्रष्टा - पृष्ठ 126
4. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित - आज के लोकप्रिय कवि सुमन - पृष्ठ 21
5. डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित - आजके लोकप्रिय कवि सुमन - पृष्ठ 22

गुणविधान में कवि ने ओज माधुर्य और प्रसाद के महत्व पर बल दिया। इसके अतिरिक्त सुमनजीने काव्यमें व्याप्त अभिधा, लक्षणा, व्यंजना शब्द शक्ति की मीमांसा की हैं।

इस तरह सुमनजीने मुक्तछंद, गेय छंद आदि की का सुंदर विवेचन अपने काव्यमें किया हैं। साथ ही अलंकार विविध शैलियाँ, और बिंब विधानोंका सुंदर प्रयाग अपने काव्यमें किया। गुण विधानमें कविने ओज माधुर्य, प्रसाद गुण का और अभिधा, लक्षण, व्यंजना शब्दशक्ति की मीमांसा की।

अंतमें शिल्पविधान की इस विस्तृत चर्चा से हम निःसंदेह कह सकते हैंकि, डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन एक श्रेष्ठ कवि हैं।